LGBTQ पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद

विक्रम चंद्र गोयल

कट्टरपंथियों और कुछ सामान्य लोगों के भी सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध बयान सामने आ रहे हैं। यह संभवत:मनुष्य के जन्म के संबंध में वास्तविक जानकारी न होने के कारण है। स्थिति स्पष्ट करने का एक प्रयास कर रहा हूं।

"सेक्स" एक जटिल विषय है; सामान्यत इसे विभिन्न अन्त: सम्बंधित श्रेणियों में बांटा जाता है:

जीनोटायपिक सेक्स, जो वंशानुक्रमण से प्राप्त XX या XY क्रोमोसोमस् से निर्धारित होता है। यहां यह समझ लेना आवश्यक है कि महिला से सदैव X क्रोमोसोम मिलता है। यह पुरुष है जो X या Y क्रोमोसोम देता है। जब पुरुष से X क्रोमोसोम मिलता है तो X X क्रोमोसोम मिलकर स्त्रीलिंगी भ्रूण का विकास होता है। जब उससे Y क्रोमोसोम मिलता है तो X Y क्रोमोसोम मिलकर पुरुषलिंगी भ्रूण का विकास होता है। स्पष्ट है कि शिशु के लिंग का निर्धारण पुरुष द्वारा प्रदत्त क्रोमोसोम से होता है। दुर्भाग्य है कि पुरुष प्रधान समाज सदियों से लड़की होने का दोष महिला पर लगा कर उनको प्रताड़ित करता रहा है जो अब भी जारी है।

फीनोटायपिक सेक्स, आन्तरिक/बाह्य जननेन्द्रियों के विकास से निर्धारित होता है।

तंत्रिकाविज्ञान (Neuroscience) की खोजों से यह भी ज्ञात हुआ है कि सेक्स की एक श्रेणी मस्तिष्क सेक्स (the brain se&) है जिसका तात्पर्य है कि पुरुष और महिला के मस्तिष्क में प्रकार्यक (functional) भिन्नता होती है और वे अलग प्रकार से व्यवस्थित होते हैं। इसे मस्तिष्क की द्विरूपता (dimorphism) कहते हैं।

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि मस्तिष्क की द्विरूपता कैसे विकसित होती है? विकसित हो रहे नर भ्रूण में, अपरिपक्व अंडग्रंथि टेस्टॉस्टरान बनाते हैं, जो मस्तिष्क में इस्ट्राडायल (estradiol) में बदल जाता है। इस्ट्राडायल से "पुरुष" मस्तिष्क पैटर्न विकसित होता है। विकसित हो रहे नारी भ्रूण में टेस्टॉस्टरान/इस्ट्राडायल के अभाव के कारण "महिला" मस्तिष्क पैटर्न बनते हैं। यही मस्तिष्क सेक्स पूरे जीवन रहता है।

यदि भ्रूण का विकास सामान्य प्रकार से होता है तो वह स्पष्ट रूप से पुरुष या महिला बनता है। किन्तु हम जानते हैं कि जीन्स की कापिंग प्रक्रिया में छोटी चूक हो जाने पर भ्रूण के विकास में अनेक गड़बड़ियां उत्पन्न हो सकती हैं। यह संभव है कि व्यक्ति मस्तिष्क से महिला हो किन्तु शारीरिक बनावट पुरुष की हो। ऐसा व्यक्ति सेक्स के मामले में महिला जैसा व्यवहार करेगा। वहीं यदि व्यक्ति पुरुष मस्तिष्क का हो और बनावट महिला की हो तो वह व्यस्क होने पर सेक्स के माने में पुरुष जैसा व्यवहार करेगा। बाकी स्थितियां इन दोनों के बीच की या इनसे मिलती-जुलती हो सकती हैं। ऐसे व्यक्तियों के सेक्सुअल आचरण में उनका कोई दोष नहीं है। उनके साथ अभी तक बहुत अन्याय हुआ है, अब भूल सुधार का अवसर है।

जो मौलवी या हिन्दू महासभाई भड़क रहें हैं वे अपने अल्लाह या भगवान से इसका जवाब मांगे।

शिकागो में मोहन भागवत की हिंदू एकता उर्फ़ वर्णाश्रम धर्म में जाति की दिमाग़ी बीमारी

बाबर और राणा सांगा में भयानक युद्ध चल रहा था ।

बाबर ने युद्ध में पहली बार तोपों का इस्तेमाल किया था । उन दिनों युद्ध केवल दिन में लड़ा जाता था, शाम के समय दोनों तरफ के सैनिक अपने अपने शिविरों में आराम करते थे। फिर सुबह युद्ध होता था !

लड़ते लड़ते शाम हो चली थी , दोनों तरफ के सैनिक अपने शिविरों में भोजन तैयार कर रहे थे।

बाबर टहलते हुए अपने शिविर के बाहर खड़ा दुश्मन सेना के कैम्प को देख रहा था तभी उसे राणा सांगा की सेना के

शिविरों से कई जगह से धुँआ उठता दिखाई दिया। बाबर को लगा कि दुश्मन के शिविर में आग लग गई है, उसने तुरंत अपने सेनापति मीर बांकी को बुलाया और पूछा कि देखो दुश्मन के शिविर में आग लग गई है क्या ? शिविर में पचासों जगहों से धुँआ निकल रहा हैं।

सेनापति ने अपने गुप्तचरों को आदेश दिया -जाओ पता लगाओं कि दुश्मन के सैन्य शिविर से इतनी बड़ी संख्या में इतनी जगहों से धुँओ का गुब्बार क्यों निकल रहा है ? गुप्तचर कुछ देर बाद लौटे उन्होंने बताया हुजूर दुश्मन सैनिक सब हिन्दू हैं वो एक साथ एक जगह बैठकर खाना नहीं खाते ।

सेना में कई जात के सैनिक है जो एक दूसरे का छुआ नहीं खाते इसलिए सब अपना अपना भोजन अलग अलग बनाते हैं अलग अलग खाते हैं।

एक दूसरे का छुआ पानी तक नहीं पीते। यह सुनकर बाबर खूब जोर से हँसा। काफी देर हँसने के बाद उसने सेनापति से कहा- बांकी फ़तेह हमारी ही होगी ! ये क्या हमसे लड़ेंगे, जो सेना एक साथ मिल बैठकर खाना तक नहीं खा सकती, वो एक साथ मिलकर दुश्मन के खिलाफ कैसे लड़ेगी ?

बाबर सही था।

तीन दिनों में राणा सांगा की सेना मार दी गई और बाबर ने मुग़ल शासन की नींव रखी। भारत की गुलामी के पीछे जो भेदभाव था वह आज भी जारी है।

'प्राचीन' समय की बात

संजय श्रमण

'**प्रा**चीन' समय की बात है, इतनी प्राचीन कि तब चीन पैदा नहीं हुआ था और चीनीयों ने पैदा करना शुरू नहीं किया था।

सुमेरु पर्वत की तलहटी में एक नदी के किनारे बसे 'फटफटिया' नामक गाँव में एक प्रतापी बालक का जन्म हुआ. उसका और उसकी माता का शरीर हाड़ मास का था लेकिन लोग बाग़ कहते थे कि उसके पिता का शरीर वायु और अग्नि से बना था.

बालक स्वयं और उसकी माता भी उस पिता का नाम नहीं जानते थे, अधिक कुरेदने पर बालक की माता शर्माकर सिर्फ दिया जलाती थी और फूंक मारकर बुझा देती थी.

इस प्रकार पूरे जगत में यह प्रसिद्ध हो गया कि इस तेजस्वी बालक के पिता अग्नि और वायु ही हैं.

बालक के मुख मंडल पर प्रज्वलित अग्नि समान तेज था, बालक की बुद्धि वायु की तरह तीव्र थी उसने तीन वर्ष की उम्र में ही समस्त शास्त्र कंठस्थ कर लिए और सात वर्ष की आयु तक आते आते उसने स्तुतियों और गीतों की रचना आरंभ कर दी. अपनी दिव्य बुद्धि के प्रयोग से उसने मगरमच्छों, शेर, चीतों और जहरीले नागों तक को शास्त्रपाठ करना सिखा दिया था.

एक दिन बालक दिव्य अध्यात्म विद्या का प्रचार करने की इच्छा से घर छोड़कर निकला.

नन्हे लेकिन मजबूत कदमों से समस्त भारत का भ्रमण करते हुए एक बड़ी नदी के किनारे शांत और सुंदर जगह आश्रम बनाकर अध्यात्म विद्या की शिक्षा देने लगा.

कई वर्षों बाद तेजस्वी बालक एक युवक बन चुका था एक दिन की बात है, जंगल मैदान से फारिग होकर हाथ में लोटा लिए तेजस्वी युवक पवित्र मन्त्रों का उच्चारण करते हुए एक गाँव की सीमा पर भ्रमण कर रहा था. तभी उसने देखा कि कुछ अन्य असभ्य, अर्धनग्न और अशिक्षित बालक एक जमीन में सीधी रेखा में छोटे छोटे गड्ढे बना रहे हैं.

तेजस्वी युवक ने अपने से कई वर्ष छोटे उन बालकों से पूछा 'हे म्लेच्छों! आप लोग इस भूमि में ये गड्ढे किस प्रयोजन से बना रहे हैं?'

'पंडिज्जी हम यहाँ आलू बो रहे हैं'

आलू? ये आलू क्या होता है?

'पंडिज्जी आपको रोज भूनकर और घी लगाकर जो मुफ्त में परोसा जाता है उसे आलू कहते हैं'

अच्छा अच्छा वह वस्तू जो गोल गोल और नरम नरम होती है जिसे नमक और काली मिर्च मिलाकर खाते हैं? उसे आप आलू कहते हैं?

'जी पंडिज्जी'

अच्छा तो आप उसे इस गड्ढे में क्यों गाढ़ रहे हैं?

'गाढ़ नहीं रहे हैं महाराज इसे बो रहे हैं ताकि कुछ समय बाद और अधिक आलू निकल सकें'

आश्चर्य म्लेच्छों! तो क्या इसी विधि से समस्त वस्तुओं की मात्रा बढाई जाती है?

'हाँ महाराज इसी तरह एक बीज से अन्य बीज और फसल तैयार की जाती है'

किन्तु क्या तुम अछूतों के स्पर्श के बाद भी ये बीज अंकुरित होते हैं? क्या इनकी वृद्धि होती है?

'जी पंडिज्जी ये जो भूमि है इसने अभी तक आपके शास्त्र नहीं पढ़े हैं इसे पता नहीं कि हम अछूत हैं और आप भूदेव हैं. यह भूमि हमारा छुआ बीज भी अंकुरित और पल्लवित करती है'

ओह! तब क्या आप मेरे शास्त्रों और श्लोकों को भी इसी तरह बढाकर महाकाव्य बना सकते हैं?

'जी महाराज अपने शास्त्र ले आइये हम उन्हें भी यहाँ बो देंगे, आपके श्लोकों की गुटका अगले दो माहों में विराट महाकाव्य बन जायेगी'

अहो म्लेच्छों! प्रभु की लीला अपरंपार है. मैं अभी अपने सभी शास्त्र यहाँ ले आता हूँ.

तेजस्वी युवक के वहां लौटकर आने तक उन नटखट म्लेच्छ बालकों ने एक बड़ा सा गड्ढा बना लिया था और दबी-दबी सी मुस्कराहट चेहरों पर लिए एक एक शास्त्र को गड्ढे में डालने लगे. तेजस्वी युवक देववाणी में स्वरचित श्लोकों का सोच्चारण पाठ करते हुए मंत्रमुग्ध हुआ जा रहा था.

गड्ढे में पूरी तरह मिट्टी भर दिए जाने पर तेजस्वी युवक ने ग्रामीण म्लेच्छ बालकों से पूछा कि मेरी गुटका कब तक महाकाव्य बन जायेगी?

इस प्रश्न को सुनते ही नटखट म्लेच्छ बालक जोर जोर से हँसते हुए गाँव की तरफ भाग गये.

तेजस्वी युवक देववाणी में शाप देते हुए उन म्लेच्छों का पीछा करता हुआ गाँव में पहुंचा और गाँव के बुजुर्गों से शिकायत की. गाँव की पंचायत बुलाई गयी. तेजस्वी ने अपना पक्ष रखा कि ठीक दो माह बाद महाकाव्य खोदकर निकाला जाये और उन्ही बालकों को इस काम में लगाया जाए जिन्होंने यह आश्वासन दिया है.

पंचायत ने दोनों पक्षों पर विचार करते हुए कुछ प्रश्न पूछे

पंचायत बोली 'हे तेजस्वी, आप किस मस्तिष्क और बुद्धि से उस महाकाव्य का पारायण करेंगे?'

तेजस्वी बोला-इसी मस्तिष्क और बुद्धि से पंचश्रेष्ठों!

'किन्तु यह बुद्धि और यह मस्तिष्क तो उस योग्य नहीं है, इसी से तो अभी आपने छोटे श्लोक और गुटका रचा है इसी से उस महाकाव्य को कैसे समझ सकेंगे विप्रश्रेष्ठ?

मैं कुछ समझा नहीं पंचों ङ्क तेजस्वी युवक बोला

'इसका अर्थ यह है विप्रवर कि आपकी बुद्धि और मस्तिष्क को भी दो माह तक उस महाकाव्य को ग्रहण करने योग्य विशाल बनना होगा तभी आप उसे समझ सकेंगे और उसका अनुशीलन कर सकेंगे' सभी पञ्च बोले

यह बात तर्क संगत प्रतीत होती है पंचों किन्तु यह कैसे संभव है?

'यह उसी तरीके से संभव है जिस तरीके से आलू को या आपके श्लोकों की गुटका को गड्ढे में गाढ़कर बड़े बड़े आलू और महाकाव्य में बदला जा रहा है', पंचों ने फिर कहा मैं कुछ समझा नहीं पञ्च गणों कृपया विस्तार से बताएं

'इसका अर्थ यह है महानुभाव कि आपकी श्लोकमयी गुटका के बगल से गड्ढा खोदकर आपकी खोपड़ी भी उस गड्ढे में रखी जाए तब दो माह बाद आपकी बुद्धि उस महाकाव्य का अनुशीलन और पारायण करने योग्य बन सकेगी' सभी पंचों ने समवेत स्वर में कहा.

यह सुनते ही तेजस्वी युवक अपनी धोती लपेटकर तेजी से गाँव से बाहर की तरफ भागा और उधर गाँव में नटखट बालक वृन्द और पञ्चगण सहित पूरा गाँव थाली बजा बजाकर नाचने लगा.

तब से आज तक उस गाँव में कोई भी बाबा, योगी, रजिस्टर्ड भगवान, सद्गुरु और बापू अपने धर्म का उपदेश देने नहीं गया.

(आधुनिक बेबाक बोध कथा)

सरकार ने पिछले चार साल में तेल के ज़रिये आपका 'तेल' निकाल दिया है

रवीश कुमार

यूपीए ने 2005-06 से 2013-14 के बीच जितना पेट्रोल-डीज़ल की एक्साइज़ ड्यूटी से नहीं वसूला उससे करीब तीन लाख करोड़ रुपये ज़्यादा उत्पाद शुल्क एनडीए ने चार साल में वसूला है.

तेल की बढ़ी क़ीमतों पर तेल मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का तर्क है कि यूपीए सरकार ने 1.44 लाख करोड़ रुपये तेल बॉन्ड के ज़रिए जुटाए थे जिस पर ब्याज की देनदारी 70,000 करोड़ बनती है. मोदी सरकार ने इसे भरा है. 90 रुपये तेल के दाम हो जाने पर यह सफ़ाई है तो इस में भी झोल है. सरकार ने तेल के ज़रिए आपका तेल निकाल दिया है.

आनिंद्यों चक्रवर्ती ने हिसाब लगाया है कि यूपीए ने 2005-06 से 2013-14 के बीच जितना पेट्रोल-डीज़ल की एक्साइज़ ड्यूटी से नहीं वसूला उससे करीब तीन लाख करोड़ रुपये ज़्यादा उत्पाद शुल्क एनडीए ने चार साल में वसूला है. उस वसूली में से दो लाख करोड़ चुका देना कोई बहुत बड़ी रक़म नहीं है.

यूपीए सरकार ने 2005-06 से 2013-14 तक 6 लाख 18 हज़ार करोड़ पेट्रोलियम उत्पादों से टैक्स के रूप में वसूला. मोदी सरकार ने 2014-15 से लेकर 2017 के बीच 8, 17,152 करोड़ वसूला है.

इस साल ही मोदी सरकार पेट्रोलियम उत्पादों से ढाई लाख करोड़ से ज़्यादा कमाने जा रही है. इस साल का जोड़ दें तो मोदी सरकार चार साल में ही 10 लाख से 11 लाख करोड़ आपसे वसूल चुकी होगी. तो धर्मेंद्र प्रधान की यह दलील बहुत दमदार नहीं है.

आप कल्पना करें आपने दस साल के बराबर चार साल में इस सरकार को पेट्रोलियम उत्पादों के ज़रिए टैक्स दिया है. जबकि सरकार के दावे के अनुसार उसके चार साल में पचीस करोड़ से ज़्यादा लोगों ने गैस सब्सिडी छोड़ दी है. फिर भी आपसे टैक्स चूसा गया है जैसे ख़ून चूसा जाता है.

आनिंद्यों चक्रवर्ती ने अपने आंकलन का सोर्स भी बताया है जो उनके ट्वीट में है. अब ऑयल बॉन्ड की कथा समझें. 2005 से कच्चे तेल का दाम तेज़ी से बढ़ना शुरू हुआ. 25 डॉलर प्रति बैरल से 60 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंचा. तब तेल के दाम सरकार के नियंत्रण में थे.

सरकार तेल कंपनियों पर दबाव डालती थी कि आपकी लागत का दस रुपया हम चुका देंगे आप दाम न बढ़ाएं. सरकार यह पैसा नगद में नहीं देती थी. इसके लिए बॉन्ड जारी करती थी जिसे हम आप या कोई भी ख़रीदता था.

तेल कंपनियों को वही बॉन्ड दिया जाता था जिसे तेल कंपनियां बेच देती थीं. मगर सरकार पर यह लोन बना रहता था. कोई भी सरकार इस तरह का लोन तुरंत नहीं चुकाती है वो अगले साल पर टाल देती है ताकि जीडीपी का बहीखाता बढ़िया लगे.

तो यूपीए सरकार ने एक लाख चवालीस हज़ार करोड़ का ऑयल बॉन्ड नहीं चुकाया. जिसे एनडीए ने भरा. क्या एनडीए ऐसा नहीं करती है?

मोदी सरकार ने भी खाद सब्सिडी और भारतीय खाद्य निगम व अन्य को एक लाख करोड़ से कुछ का बॉन्ड जारी किया जिसका भुगतान अगले साल पर टाल दिया.

दिसंबर 2017 के कैग रिपोर्ट के अनुसार 2016-17 में मोदी सरकार ने 1,03,331 करोड़ रुपये का सब्सिडी पेमेंट टाल दिया था. यही आरोप मोदी सरकार यूपीए पर लगा रही है. जबकि वह ख़ुद भी ऐसा कर रही है. इस एक लाख करोड़ का पेमेंट टाल देने से जीडीपी में वित्तीय घाटा क़रीब 0.06 प्रतिशत कम दिखेगा. आपको लगेगा कि वित्तीय घाटा नियंत्रण में हैं.

अब यह सब तो हिन्दी अख़बारों में छपेगा नहीं. चैनलों में दिखेगा नहीं. फ़ेसबुक भी गति धीमी कर देता है तो करोड़ों लोगों तक यह बातें कैसे पहुंचेंगी. केवल मंत्री का बयान पहुंच रहा है जैसे कोई मंत्र हो.